फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 71 संख्याः 352 प्रभात जयपुर, गुरुवार 22 जुलाई, 2021 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.00 रु.

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

ARBiT TODAY

Off to the Land of the Kangaroo and Koala Bear

The next day was reserved for a trip to the Great Barrier Reef - one of nature's most beautiful gifts to mankind. The whole reef is made of multi coloured coral.

GEOGRAPHY: Earth's Anatomy

असम के मानस नैशनल पार्क में वयस्क बाघों की आबादी में एक दशक में तीन गुना बढ़ोतरी हुई है, जो देश में टाइगर कंज़र्वेशन के क्षेत्र में एक रिकॉर्ड है। मानस नैशनल पार्क, जो कभी विद्रोहियों की समस्या से त्रस्त था, वहां आज 38 वयस्क बाघ हैं। सन् 2010 में इनकी संख्या मात्र 10 थी। इस वर्ष हुए बारहवें वार्षिक कैमरा ट्रैपिंग सर्वे में 48 बाघों की मौजूदगी का पता चला है, जिनमें 38 वयस्क, तीन किशोरवय और 7 शावक हैं। वयस्क बाघों में 21 मादा व 16 नर हैं तथा एक का लिंग ज्ञात नहीं है। मानस टाइगर रिजर्व में पहली बार विस्तृत कैमरा ट्रैप सर्वे किया गया है, इसमें सम्पूर्ण मानस नैशनल पार्क शामिल है। मानस टाइगर प्रोजेक्ट के फील्ड डायरैक्टर अमल चन्द्र सरमा ने बताया कि मानस रिज़र्व विश्व के उन चुनिंदा सुदूर संरक्षित क्षेत्रों में एक है, जहां सन् 2020 तक टाइगर की आबादी दोगुनी करने का लक्ष्य प्राप्त किया जा चुका है। दस साल में यहां टाइगर की आबादी में तीन गुना वृद्धि हुई है। कैमरा ट्रैप सर्वे की कोर टीम का नेतृत्व कर रहे सरमा ने कहा कि मानस में बाघ फल फूल रहे हैं और उनकी संख्या में हुई यह वृद्धि विश्व में उदाहरण बन गई है। प्रजनन योग्य मादाओं व शावकों की संख्या में वृद्धि यह बताती है कि मानस रिज़र्व टाइगर के लिए एक स्वस्थ प्रजनन केन्द्र है। उल्लेखनीय है कि सन् 2020 में उत्तर प्रदेश के पीलीभीत टाइगर रिज़र्व को एक अन्तर्राष्ट्रीय अवॉर्ड मिला था, क्योंकि यहां चार साल में बाघ की आबादी में दोगुनी से ज्यादा वृद्धि हुई थी। सन् 2014 में यहां 25 बाघ थे और 2018 में उनकी संख्या 65 हो गई थी। मानस में हुए हालिया कैमरा ट्रैप सर्वे में 37 तेंदुओं की उपस्थिति का भी पता चला है। इसमें 31 वयस्क व 6 किशोर हैं। इसके अलावा लैपर्ड कैट, क्लाउडैड लैपर्ड, मार्बल्ड कैट, गोल्डन कैट व जंगल कैट जैसी दुर्लभ प्रजातियां भी दिखी हैं। इस बारहवें वार्षिक कैमरा ट्रैप सर्वे में कई संकटग्रस्त प्रजातियां भी देखी गई हैं। आई.यू.सी.एन. (इन्टर नैशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ नेचर) के अनुसार इनमें 9 प्रजातियां "वल्नरेबल," 4 प्रजातियां "एन्डेन्जर्ड", 4 प्रजातियां "निअर थ्रैटन्ड" और 11 प्रजातियां "लीस्ट कन्सर्न" वर्ग की हैं। इन प्रजातियों में प्रमुख हैं, एशियाई हाथी, हॉग डिअर, हिस्पिड हेअर (रोमिल खरगोश), जंगली भैंस, राइनो, साम्बर हिरण, स्वॉम्प डिअर, चित्तीदार हिरण, बार्किंग हिरण, हिमालयन काला भालू, हिमालयन सैरो, गोरल, ब्लैक पैंथर और बिन्टूरोंग।

'क्या कारण है कि राजस्थान में सरकार रिपीट नहीं हो पाती'

'एक बार हम 50 और एक बार 20 पर रह गए'

- सचिन पायलट ने बिना मुख्यमंत्री गहलोत का नाम लिए 2003 और 2013 की कांग्रेस की बड़ी हार के मुद्दे को हवा दी।
- पायलट ने फोन टैपिंग के मुद्दे पर कहा कि, जब फ्रांस ने जांच बिठा दी है तो यहां क्यों नहीं।
- ऑक्सीजन की कमी से मौतें नहीं होने की बात लोगों के गले नहीं उतर रही, सभी ने देखा कितने लोगों ने दम तोड़ा है।

जयपुर, 21 जुलाई (का.प्र.)। राजस्थान में अजय माकन के री-ट्वीट के बाद शुरू हुई राजनीतिक चर्चाओं के बीच जयपुर लौटे सचिन पायलट ने बुधवार को कहा कि "राजस्थान में जब हमारी सरकार बनती है तो उसके बाद दोबारा हम उसी स्टेटस पर नहीं आ पाते। एक बार हमारी सरकार आई तो 50 विधायक रह गए और उसके बाद 20 विधायक रह गए।" पायलट ने हालांकि नाम तो नहीं लिया लेकिन इस बयान के जरिए उन्होंने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के नेतृत्व में वर्ष 2003 और वर्ष 2013 में हुए विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की बड़ी हार के मुद्दे को हवा दे दी।

पायलट ने कहा कि "राजस्थान में जब सरकार बनी, तो उसके बाद हम उसे सस्टेन नहीं कर पाए और सरकार दोबारा नहीं बनी। सरकार दोबारा बने यह सब की सामूहिक जिम्मेदारी होती है। हम चाहते हैं कि प्रदेश में हमें जनता का जो आशीर्वाद मिला है, तो आगे के चुनाव के लिए हमें अपने कामों, कड़ी मेहनत और एकजुटता के लिए और मिले।"

पायलट ने इसी के साथ कहा कि "इन्हीं मुद्दों को लेकर हमने अपने सुझाव आलाकमान के सामने रखे थे। ये बातें आलाकमान के सामने रखना हमारा अधिकार भी था। जिस संदर्भ में हमें बात कहनी थी वह कह दी गई और उस पर एआईसीसी ने संज्ञान ले लिया। कमेटी बनी, कमेटी ने मीटिंग की और अब समय रहते निर्णय ले लिया जाएगा ताकि लोगों को जो उम्मीदें हैं वह पूरी हो सके। पायलट बोले कि जब मैं साढ़े 6 साल प्रदेश अध्यक्ष रहा, तो भी मैंने कहा कि जिन लोगों ने अपना सब कुछ पार्टी के लिए न्यौछावर किया है, दिन-रात नहीं देखा, लाठियां खाई, मुकदमे झेले, अपनी जेब से पैसा खर्च किया, उन लोगों को पद या पोस्ट नहीं मिले, लेकिन मान-सम्मान तो कम से कम मिलना चाहिए। यही बात हमारे वर्तमान अध्यक्ष भी बोलते हैं और पार्टी के सब नेता बोलते हैं। हम चाहते हैं कि कांग्रेस पार्टी का परिवार व्यापक बनें और उसमें नए लोग जुड़े। इसके साथ ही जो मेहनत करता है, उसके अनुपात में कांग्रेस कार्यकर्ता को पॉलिटिकल रिवॉर्ड भी मिले, यही बात हमने शुरू से रखी है।

यहां उल्लेखनीय है कि जब 1998 में राजस्थान कांग्रेस में मुख्यमंत्री पद की चेहरों के रूप में जाट नेता परसराम मदेरणा और ब्राह्मण नेता के रूप में पंडित नवल किशोर शर्मा स्वाभाविक दावेदार थे, उस समय मुख्यमंत्री अशोक गहलोत मुख्यमंत्री बने थे। उस समय कांग्रेस को 156 सीटें मिली थी, लेकिन मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के नेतृत्व में 2003 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की सीटें 56 रह गई थी। वहीं साल 2008 में जब अशोक गहलोत दोबारा मुख्यमंत्री बने, और 2013 में फिर गहलोत के नेतृत्व में चुनाव हुए तो राजस्थान में कांग्रेस को केवल 21 सीटें मिली थी।

फोन टैपिंग के मुद्दे को लेकर सचिन पायलट ने कहा कि आज मेरा है, कल आपका हो सकता है। हमने तो मुद्दा संस्थागत बनाया है। इसमें भाजपा और कांग्रेस वाली बात नही है। उन्होंने कहा कि "जब फ्रांस ने जांच बिठा दी है, तो यहाँ क्यो नहीं।" पायलट ने इस मुद्दे पर जेपीसी के गठन या सुप्रीम कोर्ट की देखरख में जांच की मांग भी की है।

केंद्र सरकार की ओर से संसद में ऑक्सीजन से मौतें नहीं होने के बयान को लेकर सचिन पायलट ने कहा कि देश मे ऑक्सीजन की कमी से मौतें नहीं हुई,ऐसा कहा जाना लोगों के गले नही उतर रहा है। हम सभी ने देखा है कि कितने लोगों ने दम तोडा था। हाहाकार मचने पर सरकार ने क्या किया था, यह भी पूरी दुनिया ने देखा है। केंद्र सरकार को चाहिए कि वह करोना से हुई मौतों के मामले में ऑडिट करवाएं। कितने लोग इस दुनिया में नहीं रहे, उनकी मौत दुखद है लेकिन यह बोल देना कि ऑक्सीजन की कमी से मौतें नहीं हुई, तो यह उनके साथ में मजाक है। केंद्र

(शेष पृष्ठ 5 पर)

मायावती ने भी "सॉफ्ट हिन्दुत्व" का रास्ता अपनाया

मायावती ने इस दिशा में पहला कदम उठाया है, अगले सप्ताह यू.पी. में ब्राह्मण सम्मेलन आयोजित करने के "प्लान" से

- श्रीनन्द झा -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 21 जुलाई। बसपा प्रमुख मायावती ने आगामी विधानसभा चुनावों के दौरान हिन्दू वोटों को अपनी ओर खींचने की तैयारियाँ शुरू कर दी हैं, इसलिये अब अधिकांश राजनैतिक दल अपनी प्रचार योजनाओं को हिन्दुत्व की दिशा में ले जाने पर विचार करते प्रतीत हो रहे हैं।

जहाँ सपा प्रमुख अखिलेश यादव तथा कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा मंदिरों के चक्कर लगा रहे हैं, वहीं मायावती ने अगले सप्ताह में अयोध्या से "ब्राह्मण सम्मेलन" शुरू करने की घोषणा कर दी है। बसपा अपने इस कार्यक्रम को वाराणसी, प्रयागराज तथा मथुरा सहित अन्य धार्मिक केन्द्रों पर इसी प्रकार के आयोजन, सम्मेलन एवं समारोह को हिन्दुत्व के साथ एकाकार करने की कोशिश करते हुये आगे बढायेगी। मायावती की इच्छा है कि वे 2007 के चुनावों में हुये चमत्कार की पुनरावृत्ति करें। ज्ञातव्य है कि मायावती की इस प्रकार की कोशिश से, बसपा को 2007 में बहुमत हासिल करने में उल्लेखनीय मदद मिली थी। पिछले तीन चुनावों में, भाजपा ने गैर-जाटव बसपा वोटों तथा गैर-यादव सपा वोटों को अपनी ओर खींच कर, सपा एवं बसपा के वोट बैंकों में सैंध लगा ली थी। इस बार, इन दोनों ही पार्टियों ने अपनी रणनीतियाँ बदल दी हैं ताकि हिन्दू वोटों को भाजपा के पक्ष में एकजुट होने से रोका जा सके। बसपा के कुछ वर्गों का कहना है कि रणनीति में किया गया यह बदलाव बिल्कुल युक्तिसंगत है क्योंकि तथ्य यह है कि उत्तर प्रदेश की राजनीति में योगी आदित्यनाथ की मौजूदगी से हिन्दुत्व राजनीति की स्थिति बदल गई है। बताया जाता है कि ब्राह्मण जो राज्य के मतदाताओं के 12 प्रतिशत हैं, भाजपा से अप्रसन्न हैं तथा इसके कई कारण हैं, जिनमें गैंग्स्टर विकास दुबे की पुलिस मुठभेड़ में हत्या कर दिया जाना भी शामिल है। लेकिन यह अनिश्चित ही है कि बसपा का ब्राह्मणों को महत्व देने का यह नया अभियान ब्राह्मण समुदाय को उनकी पार्टी की और आकर्षित कर पायेगा। ब्राह्मणों ने केवल एक बार, 2007 में बसपा के पक्ष में मतदान किया था तथा उस समय पार्टी द्वारा खड़े किये गये 51 ब्राह्मण प्रत्याशियों में से 20 प्रत्याशी विजयी रहे थे। 2012 में, बसपा द्वारा खड़े किये गये 51 ब्राह्मण उम्मीदवारों में से केवल 7 उम्मीदवार ही जीत पाये थे। 2017 में बसपा ने 52 ब्राह्मण प्रत्याशी खड़े किये थे, जिनमें से सिर्फ 4 लोग ही जीत सके थे। 2007 में, बसपा का नारा था- "ब्राह्मण शंख बजायेगा, हाथी चलता जायेगा।" मायावती को इस बार भी वैसे ही नारों तथा पार्टी के विश्वसनीय नीतिगत योजना, जिसमें एक समावेशी एजेंडा की पार्टी की नई रणनीति समाहित हो, को सामने लाने की जरूरत होगी। दूसरे शब्दों में, मायावती का "सॉफ्ट" हिन्दुत्व तभी कारगर हो सकेगा, जब यह दिखाई दे कि वे अपने बल पर सरकार बनाने में सक्षम हैं। फिलहाल, ऐसी संभावनाएं बहुत दूर की कौड़ी दिखाई दे रही हैं।

- मायावती को आशा है कि वे, 2007 का अनुभव दोहरा सकेंगी, जब ब्राह्मण-दलित वोटों को आकर्षित कर बसपा ने अपने दम पर बिना किसी अन्य पार्टी का सहयोग लिये सरकार बनायी थी यू.पी. में।

किसानों का जन्तर मन्तर पर प्रदर्शन होगा

- जाल खंबाता -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 21 जुलाई। दिल्ली की सीमाओं पर आंदोलन कर रहे किसानों को गुरुवार से जन्तर-मन्तर प्रदर्शन करने की अनुमति प्रदान कर दी गई। ज्ञातव्य है कि संसद भवन से मात्र एक किलोमीटर के फासले पर स्थित जन्तर-मन्तर पर प्रदर्शन के लिये पहले दिल्ली पुलिस ने इंकार कर दिया था।

- किसानों का एकता मोर्चा व दिल्ली पुलिस के बीच समझौता होने पर इस प्रदर्शन की इजाजत मिली।

प्रदर्शन की अनुमति इसलिये प्रदान करनी पड़ी क्योंकि दिल्ली पुलिस को ऐसी गुप्तचर सूचनाएं प्राप्त हुई थी कि अगर किसानों को इसकी अनुमति नहीं दी गई तो वे पूरी सुरक्षा व्यवस्था के बावजूद, चार-चार, पाँच-पाँच के ग्रुप में चुपके से संसद में प्रवेश कर सकते हैं।

चूँकि राजपथ पर स्थित बोट क्लब पर किसी भी प्रकार के प्रदर्शनों पर रोक लगी हुई है, इसलिये अब धरने एवं

(शेष पृष्ठ 5 पर)

प्रियंका गांधी यू.पी.का "चार्ज" छोड़ना चाहती हैं

पर समस्या यह है कि, चार्ज भी छोड़ दें तथा यह छवि भी न बने कि, वे असफल रहीं यू.पी. में

- रेणु मित्तल -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 21 जुलाई। ए.आई.सी.सी. महासचिव तथा उत्तर प्रदेश प्रभारी प्रियंका गांधी उत्तर प्रदेश के प्रभार से मुक्त होना चाह रही हैं लेकिन उनके सामने सबसे बड़ी समस्या यह है कि वे विश्वास खोये बिना राज्य को छोड़े कैसे।

सूत्रों का कहना है कि राज्य के पार्टी नेताओं की जो मीटिंग अभी हाल में ही ली थी, उसमें इस बात को लेकर बड़े पैमाने पर चर्चा हुई कि राज्य में कांग्रेस कहाँ खड़ी है। लेकिन प्रियंका के अंतिम शब्द थे- "छवि खोए बिना, मैं प्रभारी पद कैसे छोड़ सकती हूँ।"

सच्चाई यह है कि वे, करीब 9 माह से अधिक के अन्तराल के बाद, अभी हाल ही में उत्तर प्रदेश गई थीं। पार्टी इस समय बहुत बुरी हालत में है, जबकि राज्य विधानसभा चुनाव अगले साल के शुरू में ही होने हैं। जहाँ तक भाजपा का प्रश्न है, भाजपा के लिये उल्टी गिनती शुरू हो चुकी है।

पार्टी के सामने एक अन्य समस्या यह है कि राज्य में कोई भी दल कांग्रेस के साथ गठबंधन करने के लिये इच्छुक नहीं है तथा किसी गठबंधन में शामिल हुये बिना, पार्टी को किसी गिनती में आने की उम्मीद नहीं है। समझा जाता है कि

- उनके यू.पी. में असफल रहने का कारण यह है कि, कोई भी पार्टी, विशेषकर सपा, कांग्रेस के साथ गठबंधन करने को तैयार नहीं।
- और जब मुस्लिम मतदाता का मन सपा के साथ है तो, कांग्रेस की झोली में क्या आयेगा।
- बिना गठबंधन के कांग्रेस को यू.पी. के चुनाव में सफलता की कोई आशा नहीं।
- एक विकल्प यह सोचा गया है कि, कांग्रेस में चार उपाध्यक्ष बनाये, राष्ट्रीय स्तर पर तथा प्रियंका गांधी इनमें से एक हों तथा राष्ट्रीय स्तर पर जिम्मेवारी संभालने से यू.पी. का चार्ज अपने आप छूट जायेगा।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

प्रेम शुक्ला भाजपा के प्रवक्ता नियुक्त

- जाल खंबाता -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 21 जुलाई। भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा ने बुधवार को मुम्बई- निवासी प्रेम शुक्ला को पार्टी का राष्ट्रीय प्रवक्ता नियुक्त कर दिया। वे शिव सेना के हिन्दी सायंकालीन समाचार पत्र "दोपहर का सामना" के सम्पादक पद से इस्तीफा देकर, 2015 में भाजपा में शामिल हुये थे। संजय निरुपम के उत्तराधिकारी के रूप में, वे लगभग एक वर्ष तक इस पत्र के सम्पादक रहे थे।

- शुक्ला भाजपा से जुड़ने के पहले शिव सेना के मुख पत्र, दोपहर का सामना के संपादक थे।

भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव अरूण ने घोषणा की कि दिल्ली-निवासी शाज़िया इल्मी (51), जो टी.वी. एंकर रहने के बाद पहले आम आदमी पार्टी में तथा जनवरी 2015 में भाजपा में शामिल हो गई थीं, भी पार्टी की राष्ट्रीय प्रवक्ता बना दी गई हैं।

ओलम्पिक्स रद्द करने का विकल्प अभी जीवित है आयोजकों के दिमाग में

यह आशंका, ओपनिंग सैरमनी से दो दिन पहले भी बनी हुई है कि, कहीं ओलम्पिक्स "सुपर स्प्रैडर" साबित न हो जायें

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 21 जुलाई। "वैश्विक महामारी एक परीक्षा है और दुनिया इसमें फेल हो रही है। उगते सूर्य का देश (जापान) की भूमि शायद दुनिया के लिए आशा का एक ऐसा नया सवेरा रोशन करे जो स्वस्थ, सुरक्षित और अनुकूल हो।" टोक्यो ओलम्पिक खेलों की उलटी गिनती शुरू होने के साथ ही 138वें अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति सत्र में यह संदेश है वर्ल्ड हैल्थ आर्गनाइजेशन (डब्ल्यू.एच.ओ.) के अध्यक्ष का। ये खेल शुक्रवार 23 जुलाई से शुरू होने है।

यह संदेश एक घबराहट भरे भाव से युक्त है कि वैश्विक महामारी आखिर क्या करेगी। क्यों ना इसका सामना करें। ये खेल कोविड-19 का एक महाप्रकोप भी ला सकते हैं। संदेश एक तरह से इसके आयोजकों की चिंताओं को प्रतिध्वनित करता है जो किसी अनहोनी की उम्मीद लगाए नहीं बैठे हैं और जिन्होंने वर्तमान स्थिति में खेल शुरू करने का निर्णय लिया है।

टोक्यो 2020 के सी.ई.ओ. तोशिरो मुतो कहते हैं कि अधिकारी करोना संक्रमणों की रेट के आधार पर खेलों की वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन करेंगे।टोक्यो में ओलम्पिक आयोजन से निकट रूप से सम्बद्ध करीब 79 लोगों को अब तक कोविड-19 पॉज़िटिव पाया जा चुका है।

टोक्यो से प्राप्त खबरों में कहा गया है कि ओलम्पिक आयोजन कमेटी इस विचार का खण्डन नहीं कर रही है कि यदि कोविड-19 केसों का बढ़ना जारी रहता है तो खेलों को अब भी रद्द किया जा सकता है। अब क्या होता है, को आधार मानकर खेलों की व्यावहारिकता को लेकर अधिकारी निर्णय लेंगे।

मुतो ने एक न्यूज कॉंफ्रेंस में कहा कि "यदि संक्रमणों का फैलना जारी रहा तो क्या होगा-मैं समझता हूँ यदि ऐसा होता है तो हमें पूर्णतया विचार-विमर्श करना होगा।"

मुतो ने टोक्यो ओलम्पिक आयोजकों, स्थानीय व सरकार के अधिकारियों तथआ ओलम्पिक एवं पैरालम्पिक खेलों के प्रतिनिधियों से युक्त सत्रों का हवाला देते हुए कहा कि संक्रमण रेट पर आगामी पांच पक्षीय वार्ताओं में विचार विमर्श किया जायेगा।

डब्ल्यू.एच.ओ. प्रमुख के अनुसार इन आधुनिक खेलों के 125 वर्षों के इतिहास से पता चलता है कि इनका आयोजन युद्ध, आर्थिक संकट और भू-राजनैतिक अव्यवस्था के बीच भी किया जा चुका है। लेकिन ऐसा पहले कभी नहीं हुआ कि इनका आयोजन किसी वैश्विक महामारी के दौरान किया गया हो। उन्होंने घोषणा की कि "मैं मानता हूँ कि आई.ओ.सी., टोक्यो ऑर्गनाइजेशन कमेटी, जापान की सरकार और जनता, टीमों व खिलाड़ियों ने जो सावधानियां बरती हैं और जो त्याग किया है, वह इन खेलों को जितना संभव हो उतना सुरक्षित बनाएंगे, इन योजनाओं और सावधानियों की अगले दो हफ्तों और अगले माह होने वाले पैरालम्पिक खेलों में परीक्षा होगी। मुझे पूरी उम्मीद है कि ना केवल खेलों, खिलाड़ियों, प्रशिक्षकों अधिकारियों की खातिर बल्कि एक सही योजना और संभावित सही दिशा के एक प्रदर्शन के रूप में भी इसमें सफलता मिलेगी।"

आगामी 8 अगस्त को जब ओलम्पिक मशाल बुझ जाएगी, तब तक एक लाख से अधिक लोग समाप्त हो जाएंगे। वैश्विक महामारी का केवल एक गंभीर स्वास्थ्य संकट, बल्कि इससे भी अधिक है। यह ओलम्पिक की तरह ही विज्ञान और चरित्र की भी एक परीक्षा है।

डब्ल्यु.एच.ओ. प्रमुख ने कहा कि "भगवान करे ये खेल दुनिया को जोड़ने, एकजुटता और दृढ़निश्चय के पलों के साक्षी बने। अगले वर्ष के मध्य तक प्रत्येक देश में 70 प्रतिशत आबादी का वैक्सीनेशन कर हमें इस वैश्विक महामारी को समाप्त करने की जरूरत है।"

- ओलम्पिक्स के आयोजन से जुड़े 79 व्यक्ति पॉज़िटिव पाये गये हैं, करोना वायरस संक्रमण से।
- आयोजकों का सोच है, अगर संक्रमण इसी गति से बढ़ता रहा तो गेम्स रद्द करना लाजमी हो जायेगा।

सौ दिन

- जाल खंबाता -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 21 जुलाई। गृह मंत्रालय ने इस बात को लेकर केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बलों, जिनमें सी.आर.पी.एफ., सी.आई.एस.एफ., बी.एस.एफ., आई.टी.बी.पी. तथा एस.एस.बी. शामिल हैं, की खिंचाई की है कि ये बल अभी तक वह इन हाउस सॉफ्टवेयर विकसित नहीं कर सके हैं जिससे उनके जवानों का एक वर्ष में कम से कम 100 दिन अपने परिवारों के साथ गुजारना सुनिश्चित हो सके।

- गृह मंत्रालय ने नाराजगी जतायी कि, केन्द्रीय सुरक्षा बल (सी. आर. पी. एफ., बी.एस.एफ. आदि) अभी तक यह व्यवस्था नहीं कर पाये कि जवान साल में कम से कम सौ दिन परिवार के साथ बिता सकें।

(शेष पृष्ठ 5 पर)